कहानी

सहेली का पुरुष मित्र

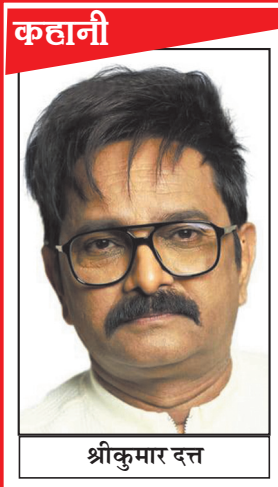

श्रीकुमार दत्त

बारिश उस शाम कुछ ज़्यादा ही बेरहम थीए जैसे आसमान ने अपने सारे आँसू एक साथ ज़मीन पर गिरा दिए हों. भीगी सड़कों पर गाड़ियों की हेडलाइट्स धुंध में खो रही थीं. उसी बीच एक छोटे से फ्लैट में अंतरा अपने लैपटॉप पर झुकी बैठी थी. ऑफिस का एक अहम प्रोजेक्ट पूरा करना था और उसका रूम पार्टनर पामेला कहीं बाहर थी. तभी टिंग टांग. डोरबेल बजी. अंतरा ने सोचा पामेला होगी, छतरी भूल गई होगी शायद. दरवाज़ा खोलते ही वह ठिठक गई. सामने कुर्ता-पायजामा पहने हुए एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति खड़ा था . कंधे पर कपड़े का बैग, बालों में हल्की सफेदी, चेहरे पर बारिश की बूँदें और आँखों में कुछ अजीब-सा रहस्य. आश्चर्यचकित होकर अंतरा ने पूछा . आप कौन हैं ,क्या चाहते हैं.

मैं परितोष,उसने कहा- पामेला का फे सबुक दोस्त. लेकिन पामेला अभी घर पर नहीं है.

मुझे पता है, उसने ही कहा कि मैं यहाँ उसका इंतज़ार करूँ. अंतरा थोड़ी झिझकी, पर खराब मौसम को देखते हुए और उसकी उम्र का सम्मान करते हुए उसने अंदर बुला लिया. आप सोफ़े पर बैठिए. वह आदमी धीरे-धीरे कमरे में दाख़िल हुआ. उसकी नज़रें कुछ ज़्यादा ही देर तक अंतरा पर ठहर गईं. उस नज़र में एक बेचैनी थी जो अंतरा को असहज कर गई. क्या मैं आपका बाथरूम इस्तेमाल कर सकता हूँ उसने पूछा. अंतरा ने सिर हिलाया और वापस अपने लैपटॉप पर जा बैठी. लेकिन बार-बार उसे महसूस हो रहा था कि वह आदमी लिविंग रूम से उसे देख रहा है. कुछ देर बाद वह उसके कमरे के दरवाज़े तक आया. एक गिलास पानी मिलेगा अंतरा ने चिढ़ते हुए पानी दिया और बोली, कृपया मुझे थोड़ा काम निपटाने दीजिए. उसने कमरे का दरवाज़ा बंद कर लिया.

लगभग बीस मिनट बाद जब काम ख़त्म हुआ, वह बाहर आई. परितोष बालकनी में खड़ा बारिश देख रहा था. बाहर अँधेरा और ठंडी हवा के साथ एक अजीब.सा सन्नाटा था.

पामेला से बात नहीं हो पा रही, अंतरा ने कहा.

वो शायद रास्ते में होगी, परितोष मुस्कराया.

अंतरा ने माहौल हल्का करने की कोशिश में पूछा, चाय लेंगे.

जरूर. उसने कहा, वैसे मैं तुम्हारे लिए कुछ लाया हूँ.

उसने अपने बैग से एक पैकेट निकाला . चॉकलेट पेस्ट्री ! आपको कैसे पता कि मुझे ये पसंद है. अंतरा ने हैरानी से पूछा.

पामेला से सुना था, वह बोला, पर उसकी मुस्कान में कुछ ऐसा था जो दिल को काँपने लगा.

चाय की चुस्कियों के बीच वह धीरे-धीरे अंतरा से बातें करने लगा . तुम्हारा परिवार कहाँ है रिलेशनशिप में हो.

अंतरा झिझकती रही. उसने सिर्फ इतना कहा कि माँ के साथ बचपन बीता, पिता की याद धुँधली है. अभी किसी के साथ रिलेशनशिप में नहीं है.

परितोष ने धीरे से कहा, मैं भी अकेला हूँ एक चित्रकार. कभी-कभी पेंटिंग ही मेरा साथ देती है. फिर वह झुककर बोला . क्या कुछ दिन पहले शहर में एक अकेली युवती के बलात्कार और हत्या की खबर सुनी है. उसने एक डिलीवरी मैन को वॉशरूम इस्तेमाल करने दिया था, और...

अंतरा ने बीच में टोका, मैं तो किसी अजनबी को अंदर आने ही नहीं देती.

परितोष ने हल्की हँसी में कहा, लेकिन मुझे तो आने दिया.

अचानक बिजली चली गई. पूरा फ्लैट अंधेरे में डूब गया. बाहर गरजती बिजली की आवाज़ और भीतर गहरी खामोशी. अंतरा का दिल ज़ोरों से धड़कने लगा. उसने झटके से कमरे का दरवाज़ा बंद कर लिया. कुछ मिनटों तक सिर्फ बारिश और दिल की धड़कन सुनाई देती रही. उसी वक्त फिर बिजली आ गई. वह डरते-डरते बाहर निकलीए पर परितोष गायब था. उसी वक्त फिर से डोरबेल बजी. अंतरा की साँसें थम गईं. काँपते हाथों से दरवाज़ा खोला . सामने पामेला थी ! कहाँ थी तू अंतरा लगभग चिल्लाई तेरा दोस्त

परितोष !

कौन परितोष पामेला ने हैरानी से कहा मैं किसी परितोष को नहीं जानती. अंतरा का चेहरा सफ़ेद पड़ गया. वो यहीं था अभी-अभी !

दोनों ने फ़्लैट की तलाशी ली. बालकनीए सोफ़ा, वॉशरूम . सब खाली. पर मेज़ पर पेस्ट्री का पैकेट और एक रोल किया हुआ ड्रॉइंग पेपर रखा था. अंतरा ने काँपते हाथों से उसे खोला. पेपर पर एक चित्र बना था . एक महिला, एक पुरुष और एक छोटी-सी बच्ची. महिला की शक्ल हूबहू अंतरा की माँ जैसी थी. नीचे लिखा था प्यार के साथ, तुम्हारा पापा. अंतरा को अपने पिता का चेहरा याद नहीं था, वे तब परिवार को छोड़कर चले गए थे जब वह चार साल की थी. जब भी पापा के बारे में पूछा जाता माँ किसी-न-किसी बहाने से टाल देती थीं. उसने काँपते स्वर में माँ को फोन किया . माँ, पापा क्या करते थे

फोन के उस पार से धीमी आवाज़ आई . वो एक चित्रकार थे, बहुत अच्छे कलाकार.

फोन हाथ से गिर पड़ा.अंतरा खिड़की की ओर भागी, बाहर बारिश थम चुकी थी. सड़क किनारे एक परछाई थी . वही कपड़े का बैग, वही सफ़ेद बाल. वह छाता खोले धीरे-धीरे अँधेरे में ग़ायब हो रहा था.

अंतरा के होंठ काँप उठे. पापा

बारिश नहीं, उसके गालों पर अब आँसू गिर रहे थे. और कमरे के भीतर, मेज़ पर पड़ा चॉकलेट पेस्ट्री का पैकेट खुला था, जिसमें एक छोटा-सा नोट था .

डरना मत, मैं सिर्फ तुम्हें एक बार देखने आया था.

अंतरा की भावनाएं अमर कलाकार जुबिन गर्ग के दिल को छू लेने वाले असमिया गीत की उस लाइन जैसी थीं .

ना सोचे हुए बातें हो जाती हैं शायद अचानक ही, पाया भी तो खो दिया समझने से पहले ही.

कविताएं

दर्द सबको सुनाया नहीं जा सकता

राज़ सब को बताया नहीं जा सकता
दर्द सब को सुनाया नहीं जा सकता !
कहने को यूँ होता है बहुत कुछ है मन में ,
लेकिन सब तो कहा नहीं जा सकता !
कुछ उमड़ता घुमड़ता रहता दिल में ऐसा,
कहे बगैर जिसे रहा नहीं जा सकता !
कोई लाख बेशक कर ले यत्न प्रयत्न
सच को झुठलाया नहीं जा सकता !
कुछ पल होते हैं ऐसे भी जिंदगी के
जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता !
किस को है किस से प्यार कितना
ये दिल चीर के दिखाया नहीं जा सकता !
अपनी आदत से होते हैं सब मज़बूर
स्वभाव पर बदलाया नहीं जा सकता !
जिसे जो कहना होता है रहता कह के
मुँह किसी का सिया नहीं जा सकता !
चेहरे पे मुस्कराहट लिए फिरता
गम यूँ कभी छुपाया नहीं जा सकता !
झूठे और खोखले ये सब रिश्ते -नाते
भरोसे इनके जिया नहीं जा सकता !
इतिहास है जब तब बदलना पाले का
एतबार उस पे किया नहीं जा सकता !
अपनी बर्बादी के बीज इंसान बोता खुद,
दोष किस्मत को दिया नहीं जा सकता !
खून पसीने से पालते- पोसते बच्चों को ,
ऋण माँ बाप का चुकाया नहीं जा सकता !
पैसे से मुमकिन है बढ़ा ली जायें साँसें चंद,
मुर्दे को पर कभी जिलाया नहीं जा सकता !
वर्तमान में ज़ी भविष्य की चिंता में न घुल,
गुजरा वक़्त कभी लौटाया नहीं जा सकता !
स्थान समय तरीका मुकर्रर है मौत का
किसी सूरत में बदलवाया नहीं जा सकता !!

✍राकेश चौहान

वे यहीं कहीं हैं आसपास

वे गये छोड़कर हमें किन्तु
होता है मन में यही भास .
वे यहीं कहीं हैं आसपास ..
वे यहीं कहीं हैं आसपास ..

कुछ हँसते से मुस्काते से .
कुछ मन का नेह लुटाते से .
जीवन में भरते से उजास ..
वे यहीं कहीं हैं आसपास ..1..

कुछ दिल का दर्द छिपाते से .
कुछ जग पर दोष लगाते से .
मन ही मन लगते से उदास ..
वे यहीं कहीं हैं आसपास ..2..

कुछ बीती याद दिलाते से .
कुछ नयी बात समझाते से .
हर पल करते जीभर प्रयास ..
वे यहीं कहीं हैं आसपास .3..

तुम कहां चल दिये

प्रीत यूँ जोड़कर, फिर हृदय तोड़कर,
तुम कहाँ चल दिये .
राह में छोड़कर, हमसे मुँह मोड़कर,
तुम कहाँ चल दिये .
तुम कहाँ चल दिये, तुम कहाँ चल दिये ..

फूल खिलता मगर, था अभी अधखिला .
प्रीत के रूप में दर्द हमको मिला .
जिनसे मधुवन हृदय का महकता कभी,
वक्त ने धूल की भेंट वो गुल किये ..
तुम कहाँ चल दिये, तुम? कहाँ चल दिये ..1..

चल रहे थे मगर, था अधूरा सफर .
छोड़कर खो गये तुम न जाने किधर .
देखती राह मंज़िल तुम्हारी निठुर,
देख सूनी डगर क्यों हमें छल दिये ..
तुम? कहाँ चल दिये, तुम? कहाँ चल दिये ..2..

शब्द फूटे थे बस, गीत था अधबना .
मन में ही रह गयी मन की हर भावना .
तुम सजाते अभी कितनी ही महफिलें,
स्वप्न आँखों में आँसू बने ढल दिये ..
तुम कहाँ चल दिये, तुम? कहाँ चल दिये

कैसे मन को धीर बंधाऊं

कैसे मन को धीर बँधाऊँ .
कैसे उनकी सुधि बिसराऊँ ..

कभी कभी ऐसा लगता है
जैसे वे आने वाले हैं .
जैसे कोई नयी योजना
हमको बतलाने वाले हैं .
कैसे उनका साथ निभाऊँ ..
कैसे उनकी सुधि बिसराऊँ ..1..

कभी कभी ऐसा लगता है
जैसे वे ग़म से बोझल? हैं .
उन्हें ढूँढ़ते नयन हमारे
लेकिन हुए कहीं ओझल हैं .
कैसे उनका मन समझाऊँ ..
कैसे उनकी सुधि बिसराऊँ ..2..

कभी कभी ऐसा लगता है
जैसे नई खबर लाये हैं .
कुछ अच्छी सी बात हुई है
इसीलिये वे हर्षाये हैं .
कैसे मैं भी हर्ष मनाऊँ ..
कैसे उनकी सुधि बिसराऊँ ..3..

✍ डॉ. राम वल्लभ आचार्य

क्लास by बड़े भाई

घरवाले टोकते रहते हैं...

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

उठो, अब तक लेटे पड़े हो !
दिन भर भटकते रहते हो, पढ़ो लिखो !
कहाँ जा रहे हो इतनी देर !

जाने पहचाने लग रहे होंगे न ये शब्द ? हाँ, सही पहचाना, यह घरवालों के शब्द हैं, हमारे दादा, पापा, भैया लोगों के शब्द हैं जो आपको बेहद परेशान भी करता है, है न ?

छोटे भाई, कई बार हमें लगता है कि हमारे परिवार के लोग बहुत हम पर दबाव डालते हैं। अच्छे अंक लाने का, दोस्तों के साथ कम घूमने का लेकिन जिसे आप परेशानी समझ रहे हैं, इसे मानसिक तनाव का नाम दे रहे हैं वो परेशानी नहीं बल्कि ईश्वर से मिला वरदान है. इस मानसिक तनाव का एक ही ईलाज है समझना.

छोटे भाई, परिवार की डांट हमेशा आपकी भलाई के लिए होती है. वो अपने आसपास की भागम भाग को देखकर कहीं आप पीछे न रह जाएँ, इसके लिए चिंतित हो उठते हैं. बस इसी से वो आपको रोकते टोकते रहते हैं जहाँ उनको आपका काम उनके हिसाब से उचित नही लगता.

छोटे भाई कभी फूटपाथ पर, अनाथालयों में जाकर देखिये कि इसी परिवार के लिए कितना तरसते हैं जो आपको यूँ ही मिला है. परिवार उस दीवार और छत की तरह है जिसके घेरे में हम सुकून से जीवन जीते हैं. जब यही सब नही होंगे तब लगेगा कि उनका होना क्या था.

मेरे दादाजी हमेशा हम सभी को कुछ भी अनुचित लगता तो रोकते रहते थे बोलते रहते थे, फिर जब वो गुज़र गए तब उनकी डांट ,उनकी फिक्र की अहमियत समझ आयी.

छोटे भाई, कहना ये चाहता हूँ कि घरवालों की डांट, उनकी रोक टोक को दिल में न बिठाएं. उनका सम्मान करें. उनकी डांट में आपके लिए प्यार ढूंढें, तनाव नही. कुछ बुरा लग भी जाय तो बुरा बरताव न कीजिये.

छोटे भाई, परिवार के सदस्य ईश्वर के वो लोग हैं जो आपका ख्याल रखने के लिए, आपको सिखाने के लिए आपको मिले होते हैं तो आपका भी कुछ फर्ज़ बनता है न..धन्यवाद

कविता

मर्तबान

सीमा नागर

रसोई के धुंधले कोने में
रखा मर्तबान,
सिर्फ़ अचार नहीं
कई मौसमों का बयान

हर परत में है नमक
धूप और इंतज़ार,
हर महक में माँ की
हथेलियों का जादू

वक्त गुज़रा
पर वो जार
अब भी थामे है
घर की धड़कन
परिवार का प्यार

सोचती हूँ
क्या हम भी ऐसे ही हैं ?
भीतर भरे, बाहर सन्नाटे से सने

कुछ यादें नमकीन,
खट्टी, कुछ मीठी,
कुछ रूह तक उतरतीं,
कुछ बस आँखें सींचतीं

हर इंसान एक मर्तबान ही तो है
जो अपने भीतर वक़्त का
स्वाद सँजोए रहता है

ना खुलता रोज़
ना खाली होता कभी,
बस जीवन की धूप में
धीरे-धीरे पकता रहता

जब आती है कोई
मुस्कान या गंध
अनायास
अनजाने ही खुल जाता
सर्दियों में बनी
खट्टी कांजी का मर्तबान.

लिटरेचर क्लब का अनूठा नवाचारी रचना शिविर

आयोजन

भावेश कानूनगो

मेरे लिए यात्रा हमेशा से एक चुनौतीपूर्ण कार्य रही है. न जाने क्यों, यात्रा पर निकलने से पूर्व एक अनजाना-सा भय मन में घर कर लेता है. ऐसा प्रतीत होता है मानो अवचेतन में कोई पुराना भय अब भी मौन होकर जीवित बैठा हो. बीते रविवार लिटरेचर क्लब देवास ने एक अनूठे नवाचारी रचना शिविर का आयोजन किया. इसमें पूरे दिन जंगल के एकांत में पढने-लिखने वाले 30 साथियों ने न केवल भ्रमण किया बल्कि प्रकृति से रचने की प्रेरणा भी ली.

लिटरेचर क्लब के तत्वावधान में रचना शिविर हेतु साहित्यिक यात्रा पर जाना था. रचना शिविर के लिए यात्रा के प्रारम्भ में बस पर पहुँचने वाला मैं अंतिम यात्री था. यात्रा भले ही छोटी थी, परंतु अनुभवों से परिपूर्ण थी. इंदौर के समीप स्थित रालामंडल और उमरीखेड़ा अभयारण्य तक की यह साहित्यिक यात्रा साहित्यिक मित्रों की उपस्थिति में और भी आनंददायी बन गई.

यात्रा का प्रथम पड़ाव रालामंडल था. इसके सामने से मैं अनेक बार गुज़र चुका था, परंतु यह पहला अवसर था जब भीतर प्रवेश करना हुआ. प्रवेश द्वार से भीतर कदम रखते ही ज्ञात हुआ कि हमें पहाड़ी के शीर्ष पर स्थित होलकर शिकारगाह तक पैदल चढ़ना है. चढ़ाई आरम्भ होते ही मन में एक विचित्र-सी अनुभूति हुई. विश्वास ही नहीं हुआ कि मैं इंदौर के इतना निकट हूँ और फिर भी प्रकृति की ऐसी गोद में. पहाड़ी पर ऊपर चढ़ते हुए नीचे दूर-दूर तक फैली मकानों की कतारें, तेज़ी से भागती गाड़ियाँ- सब कुछ जैसे पीछे छूटता जा रहा था और मैं प्रकृति के निर्मल सान्निध्य की ओर अग्रसर था.

- लगा कि हम बस प्रकृति की इस स्वाभाविक ध्वनि को घंटों सुनते रहें
- मुस्कुराते पेड़-पौधे अपने हरियाले हाथ पसारे वंदन-द्वार बने खड़े थे
- प्रकृति की गोद में बिताया पूरा दिन
- जंगल से सीखे रचने के गुर, महसूसी रचनात्मक उर्जा

पहाड़ी के शीर्ष पर शिकारगाह पहुँचकर जब होलकर काल के इतिहास को जाना तो मन श्रद्धा से भर उठा. माता अहिल्याबाई होलकर की निष्ठा, परोपकारिता और दूरदृष्टि के प्रसंग पढ़कर हृदय प्रसन्नता से पुलकित हो गया. होलकर राजवंश को बारहों ज्योतिर्लिंगों की प्रथम पूजा का अधिकार प्राप्त होना माता अहिल्या की ही देन है. उन्होंने असंख्य मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया, अनेक घाटों और स्थलों का निर्माण करवाया. यह सब पढ़कर अनायास ही उनके चरणों में नमन करने की इच्छा हुई.

इसके पश्चात यात्रा का दूसरा पड़ाव उमरीखेड़ा था. वहाँ पहुँचकर लगा मानो बचपन फिर से लौट आया हो. झूले को देखकर मन स्वयं को झूला झूलने और रस्सी पर चढ़ने से रोक नहीं पाया. दोपहर हो चुकी थी; वहीं दाल-पानिये के रूप में मिला स्वादिष्ट भोजन तन-मन को तृप्त कर गया. ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उस भोजन में भी प्रकृति ने अपना विशिष्ट स्वाद घोल दिया हो.

भोजन के बाद हम पतली पगडंडी से आगे बढ़े. घना वन हमारा स्वागत करता प्रतीत हो रहा था. मानो पेड़-पौधे अपने हरियाले हाथ फैलाकर वंदन-द्वार बनाए खड़े हों . पत्तों पर पड़ते हमारे पदचाप आत्मचिंतन हेतु विवश करते थे. ऐसा लग रहा था कि बस प्रकृति की इस स्वाभाविक ध्वनि को घंटों सुनता रहूँ.

यहाँ लिटरेचर क्लब ने रचना-शिविर का अभिनव आयोजन भी किया. प्रकृति के मधुर वातावरण में नई रचनाएँ सुनने और सृजन करने की प्रतीक्षा सभी के मन में थी. तभी मनीष वैद्य एवं मनीष शर्मा ने एक सुंदर नवाचार प्रस्तुत करते हुए सभी प्रतिभागियों से कहा कि आपस में बातचीत किए बिना और मोबाइल स्वीच ऑफ़ कर लगभग आधे घंटे तक मौन साधकर अंतर्मन में झाँकें और रचना के बीज खोजें.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी